मैं हंसना चाहती हूं

महिलाओं का एक समूह प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर जुटा था। कुछ के सिर खुले थे, कुछ के ढके, कुछ थोड़ा घूंघट डाले थीं। पूछने पर कि वह क्यों पढ़ना चाहती हैं, एक ने कहा–"मैं चिट्ठी लिखना-पढ़ना चाहती हूं।" दूसरी ने कहा–"मैं अपना नाम लिखना, साइन करना चाहती हूं। अंगूठा लगाने में शर्म आती है।" तीसरी ने कहा–"मुझसे हिसाब किताब में कोई धोखा-धड़ी न कर सके।" एक युवती जिसका थोड़ा-सा ही मुंह घूंघट से दिखाई दे रहा था बोली–"मैं हंसना चाहती हूं।" और यह कहकर वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। क्या सिर्फ़ यही कारण पढ़ना-लिखना सीखने के लिए काफ़ी नहीं है?

साभार–अनौपचारिका